A-349

Total Pages : 3 **Roll No. .....**

MASL–504

नाटक एवं नाट्यशास्त्र भाग–01

MA SANSKRIT (MASL)

1st Semester Examination, 2024 (June)

Time : 2:00 Hrs. Max. Marks : 70

नोट : – यह प्रश्न-पत्र सत्तर (70) अंकों का है, जो दो (02) खण्डों 'क' तथा 'ख' में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है। ***परीक्षार्थी अपने प्रश्नों के उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त (बी) उत्तर-पुस्तिका जारी नहीं की जायेगी।***

खण्ड–क

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न) 2×19=38

नोट : – खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए उन्नीस (19) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **दो** (02) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. नाट्यशास्त्र का स्वरूप एवं उसकी महत्ता को प्रस्तुत कीजिए।
2. नायिका के गुण एवं भेदों का वर्णन कीजिए।
3. रस प्रक्रिया एवं उसके स्वरूप का वर्णन कीजिए।

4. अभिनवगुप्त का रस-सिद्धान्त को प्रतिपादित कीजिए।

5. धनंजय के अनुसार शृंगार रस का लक्षण देते हुए उसके भेद प्रभेदों को उल्लेख कीजिए।

खण्ड–ख

(लघु उत्तरीय प्रश्न) 4×8=32

नोट : – खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए आठ (08) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल **चार** (04) प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. भुक्तिवादः से क्या तात्पर्य है ? स्पष्ट कीजिए।

2. नाट्यशास्त्र के प्रतिपाद्य विषय का वर्णन कीजिए।

3. दशरूपकम् के अनुसार नाटक का लक्षण क्या है ?

4. नाट्यशास्त्र के मंगलाचरण की व्याख्या कीजिए।

5. स्वकीया नायिका किसे कहते हैं ? स्वकीया के भेद बताइए।

6. निम्नलिखित कारिकाओं की सन्दर्भ एवं प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए :

   (क) मधुरोद्धतभेदन तद् द्वयं द्विविधं पुनः।

   लास्यताण्डवरूपेण नाटकाद्युपकारकम्॥

   (ख) शोभा विलासो माधुर्यं गाम्भीर्यं स्थैर्य तेजसी।

   ललितौदार्यमित्यष्टौ सात्विकाः पौरूषाः गुणाः॥

7. दशरूपकम् के अनुसार नृत्य की क्या विशेषताएँ हैं ? स्पष्ट कीजिए।

8. निम्नलिखित कारिकाओं का अर्थ स्पष्ट कीजिए :

(क) महासत्त्वोऽवोऽतिगम्भीरः क्षमावानविकत्थनः।

स्थिरो निगूढाहंकारो धीरोदात्तो दृढव्रतः॥

(ख) दक्षिणोऽस्यां सहृदयः गूढविप्रियकृच्छठः।

व्यक्तांगवैकृतो धृष्टः अनुकूलस्त्वेकनायिकः॥

(ग) पताकानायकस्त्वन्यः पीठमर्दो विचक्षणः।

तस्यैवानुचरो भक्तः किंचिदूनश्च तद्गुणैः॥

****